7

प्राथमिक स्तर पर (कक्षा 1–5) हिंदी की पाठ्यपुस्तकों का सीखने के प्रतिफल के आधार पर पाठन

रमेश कुमार*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 पर आधारित पाठ्यपुस्तकों में से हिंदी भाषा के लिए विकसित प्राथमिक स्तर के लिए पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* है। *रिमझिम* पाठ्य शृंखला को यदि सीखने के प्रतिफल से जोड़ दिया जाए तो देखते हैं कि यह एक जाँच बिंदु है जो गुणात्मक या मात्रात्मक रूप में मापे जा सकने वाली पूरी प्रक्रिया है। प्रत्येक कक्षा के लिए प्रतिफल निर्धारित हैं। इन निर्धारित प्रतिफलों के अनुसार हिंदी की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* का पठन-पाठन कर सकते हैं। *रिमझिम* पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पाठों को विभिन्न शिक्षण पद्धति से कैसे और सुलभ एवं सरल बना सकते हैं, ऐसा एक प्रयास प्रस्तुत है।

सीखने के प्रतिफल (कक्षा 1–5 तक)**

कक्षा 1

1. सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।
2. चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं का बारीक अवलोकन करते हैं।
3. चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं, और सराहना करते हैं।
4. संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं।
5. परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं।

कक्षा 2

1. अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाई जा रही सामग्री, जैसे—कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
2. अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।
3. चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं का बारीक अवलोकन करते हैं।
4. प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

** *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* (2017), रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित

© NCERT not to be republished

को समझते हैं, जैसे— 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं? या 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं?

कक्षा 3

1. सुनी हुई रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं या अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि को) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
2. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।

कक्षा 4

1. विविध प्रकार की सामग्री (जैसे— समाचारपत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवदेनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं।
2. अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (बाल साहित्य/समाचारपत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ते हैं।
3. पढ़ी रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/ प्रश्न पूछते हैं और अपनी राय देते हैं और अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।

कक्षा 5

1. सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं या प्रश्न पूछते हैं या अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं या अपनी बात के लिए तर्क देते हैं या निष्कर्ष निकालते हैं।
2. अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
3. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं।
4. अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।
5. भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं।

हिंदी भाषा की कक्षा 1 के प्रतिफल को ध्यान से देखने पर उपरोक्त 5 बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित होता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा विकसित *रिमझिम 1* पुस्तक पर एक अध्यापक के रूप में विचार करते हैं कि सीखने के इन प्रतिफल को कक्षा के विद्यार्थियों में कैसे सफलतापूर्वक संचालित कर सकते हैं। इसके अंतर्गत कुछ बिंदुओं पर हम प्रकाश डालेंगे—

1. कोई भी बच्चा स्कूल जाते समय कुछ दूरी अवश्य तय करता है। एक अध्यापक के रूप में हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि बच्चों से कहें कि वह अपने आस-पास लिखित एवं चित्रित चीज़ों को ध्यान से देखें और उस पर विचार करें। कुछ बच्चों से इस संबंध में बातचीत प्रत्येक दिन

© NCERT not to be republished

कर सकते हैं। इसके लिए प्रत्येक दिन दो बच्चों के लिए निर्धारित समय दे सकते हैं कि आप कुछ चीज़ों के बारे में बताएँ जो आपने अपने आस-पास देखी हैं। बच्चे प्रयास करते हैं, उन्हें कभी-कभी नयी संभावनाएँ मिल जाती हैं, कुछ नए शब्द भी वे सीख जाते हैं। इसके अलावा वे नयी जानकारियाँ भी ले सकते हैं। शिक्षक के रूप में हमारी भूमिका बच्चों द्वारा लाई गई नयी चीज़ों को आपसी बातचीत से बच्चों की जानकारी को और परिपक्व करना है। इसके अलावा शिक्षक चाहे तो सप्ताह में एक दिन बच्चों के लिए भी निर्धारित कर सकता है कि पूरे सप्ताह आपने जो नयी जानकारियाँ ली हैं, उसके चित्र या उस विषय पर अपने शब्दों में कुछ लिख कर लाएँ। ऐसा करना बच्चों में स्वतंत्र चिंतन, कल्पना, शब्द भंडार आदि में अभिवृद्धि करता है। इसके अलावा शिक्षक के रूप में हम बच्चों को किताबों में दिए गए चित्रों पर भी बातचीत कर सकते हैं, जैसे— *रिमझिम 1* के आवरण पृष्ठ पर एक खेलगीत दिया गया है वह है—

मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है।
हाथ लगाओ डर जाएगी, बाहर निकालो मर जाएगी।

आप इस खेलगीत के बारे में बातचीत कर सकते हैं। उन्हें इसी प्रकार के सुने गए खेलगीतों के बारे में पूछ सकते हैं। हम उन्हें कुछ गृहकार्य भी दे सकते हैं कि आप अपने घर में बड़े लोगों (माँ, पिताजी, दादा और दादी) से खेलगीत सुनें। आपके द्वारा सुना गया खेलगीत आप लिखकर लाएँ, उन्हें अपने दोस्तों को सुनाएँ। वस्तुत: यह खेलगीत देशज भाषा में भी हो सकता है। यहाँ अध्यापक के रूप में शब्दों के विभिन्न प्रकार के व्याकरण में न जाकर यहाँ बच्चों से खेल-खेल में उन्हें शब्दों के 4 प्रकार के रूप में बातें कर सकते हैं। उदाहरण आपके पास है। बच्चा आनंद लेता है, वह अपने शिक्षक के साथ मिलकर तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज संबंधित शब्दों की शृंखला बनाता है। इस शृंखला में अपने दोस्तों, बुजुर्गों की मदद से उसमें वृद्धि करता है तथा वह इस कार्य में आपकी भी मदद ले सकता है। अत: देखने वाली बात यह है कि यह सारे कार्य वह अपने शिक्षक की मदद से खेल-खेल में ही कर रहा है। इसके लिए उसके अलग से अवलोकन एवं व्याकरण की कक्षा नहीं करनी पड़ रही है। अत: एक संभावी शिक्षक के रूप में आप बच्चों के साथ मिलकर मिल रही संभावनाओं को उनके शिक्षण में उपयोग कर रहे हैं। बच्चे भी इसे अतिरिक्त कार्य न मानकर अपनी देखी हुई चीज़ों को ही आत्मसात करके अपने मित्रों एवं शिक्षकों से चर्चा कर रहे हैं।

रिमझिम 2 पुस्तक पर एक अध्यापक के रूप में विचार करते हैं कि सीखने के प्रतिफल को कक्षा 2 के छात्रों में कैसे सफलतापूर्वक संचालित कर सकते हैं। इसके अंतर्गत कुछ बिंदुओं पर हम प्रकाश डालेंगे, जैसे— *रिमझिम 2* की पाठ्यपुस्तक में एक कविता तितली और कली दी गई है वह है—

हरी डाल पर लगी हुई थी, नन्ही सुंदर एक कली।
तितली उससे आकर बोली, तुम लगती हो बड़ी भली।

आप इस खेलगीत के द्वारा बच्चों को तितली के बारे में जानकारी दे सकते हैं, जैसे— तितली के पंखों और

© NCERT not to be republished

उसके रंगों के बारे में तथा इसके अलावा उस कली तथा फूल के बारे में बच्चों से बातचीत कर सकते हैं। इसी क्रम को आगे रिमझिम 3, 4 और 5 में भी देख सकते हैं। अध्यापक के रूप में किसी बच्चे को मौका देते हैं। वह बच्चा कोई चित्र लेकर आता है। अब पूरी कक्षा को सम्मिलित करके बच्चों से राय लेते हैं कि आपने इस चित्र में क्या देखा है। इस प्रकार बच्चों में किसी भी सामग्री का अवलोकन, उस पर अपनी राय देना एवं उससे संदर्भित विषय मिल पाते हैं।

निरीक्षण विधि

रिमझिम1 पाठ्यपुस्तक में स्कूल के प्रथम दिन का चित्र दिया गया है। इस चित्र में बहुत-सी क्रियाएँ संचालित हो रही हैं। शिक्षक के रूप में आप विद्यालय के संबंध में बातचीत करते हैं, साथ ही आप सभी बच्चों को यह बताते हैं कि आपको 15 मिनट का समय दिया जाता है, आप सभी लोग स्कूल के प्रथम दिन के चित्र को देखिए एवं व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक रूप में जिसे आप सभी लोग पसंद करें इस पर चर्चा करें। आपको इस चित्र के संबंध में यदि कुछ बात करनी हो तो आप अपना हाथ ऊपर उठा सकते हैं।

शिक्षक के कहने पर यदि किसी बच्चे ने हाथ ऊपर उठाकर अपनी बात रखनी चाही तो एक शिक्षक के रूप में आप अन्य बच्चों की सहायता से उस बच्चे की जिज्ञासा को शांत करते हैं। ऐसा प्रयास लोकतांत्रिक तरीके से कक्षा की गतिविधि को आगे बढ़ाता है। इस प्रयास में निरीक्षण, प्रस्तुतीकरण, सहयोग एवं सभी के साथ मिलकर प्रयास करने की बात सामने आती है। यदि बच्चों के स्तर पर किसी प्रश्न का जवाब नहीं मिल पाता है, तो शिक्षक उस प्रश्न का जवाब देंगे तथा इसके अनन्तर बच्चों को दूसरे देशों के स्कूलों के बारे में भी जानने के लिए उत्साहित करेंगे। इसके अलावा एक अन्य पाठ है, 'पत्ते ही पत्ते'। इसे पढ़ाने के बाद आप बच्चों को यह गृह कार्य देंगे कि आप आपने आस-पास के विभिन्न पेड़ों से पत्तियाँ इकट्ठा करें। हर पेड़ से आपके पास एक ही पत्ती होगी। विद्यालय आने के बाद सभी बच्चों से उनके द्वारा लाई गई पत्तियों में से किन्हीं दो के बारे में चर्चा करेंगे। चर्चा का आधार बच्चों के अनुभव ही होंगे। पेड़ का नाम, उस पर उगने वाले फलों का नाम, फल कब पक जाते हैं आदि। प्रश्न आप बच्चों की मदद से बनाते हैं। इसके बाद एक बच्चा श्यामपट्ट के पास जाता है। जहाँ वह दूसरे बच्चे द्वारा प्रस्तुत विषय में से मुख्य बिंदुओं को लिखता जाता है। इस क्रम में शिक्षक के रूप में आपकी भूमिका एक सहायक की होगी जो बच्चों के साथ मिलकर उनके ज्ञान को परिपक्व बनाता है। यहाँ एक अध्यापक के रूप में आप शैक्षिक तकनीक का भी उपयोग कर सकते हैं। आप कुछ पौधों के चित्र को मोबाइल में या पेन ड्राइव में लेकर बच्चों को दिखा सकते हैं। इस क्रम में आप वृक्ष की जगह वहाँ के लोगों के बारे में भी चर्चा कर सकते हैं। ऐसा करने पर बच्चों को आनंद आएगा, वे इसे देखकर मजा लेंगे एवं चाहेंगे कि ऐसे मौके उन्हें लगातार अंतराल पर मिलें जिससे वे अपने ज्ञान को और परिपक्व बना सकें। *रिमझिम 2* की पाठ्यपुस्तक के एक पाठ 'बस के नीचे बाघ' है जिसमें बाघ, बस और उसमें

© NCERT not to be republished

बैठे लोगों का चित्र दिया गया है। बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक इस पाठ को पढ़ेंगे और फिर बच्चों से बाघ के बारे में प्रश्न पूछकर उनका आकलन कर सकते हैं कि उनको पाठ समझ में आया या नहीं। इसी क्रम को आगे *रिमझिम* 3, 4 और 5 में भी देख सकते हैं। निरीक्षण विधि की तरह हम और कई तरह की विधियाँ, जैसे— प्रश्नोत्तर विधि, कहानी विधि तथा समूह में चर्चा विधि का प्रयोग कर सकते हैं तथा बच्चों के ज्ञान को बढ़ावा दे सकते हैं। जिससे बच्चों में किसी भी सामग्री का अवलोकन कर उस पर अपनी राय देना एवं उससे संदर्भित विषय मिल पाते हैं। यह विधि बच्चों की सहभागिता से की है जिससे कि वे क्रियाशील होकर विषय से जुड़े रहें, जैसे— प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा बच्चों में प्रश्न पूछने या उनके उत्तर देने की क्षमता बढ़ती है। कहानी विधि के द्वारा वे किसी पाठ को बहुत आसानी से समझते हैं और समूह में विषय की चर्चा करने से एक-दूसरे के विचारों का अवलोकन होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक अध्यापक के रूप में एक विधि सर्वमान्य नहीं होती है बल्कि यह अध्यापक पर निर्भर करता है कि वह पाठ्यसामग्री में विविधता लाकर बच्चों को कैसे आकर्षक बनाकर प्रस्तुत करें। अत: उपरोक्त किताब के पाठन में हमने निरीक्षण, वाचन, प्रस्तुतीकरण एवं शैक्षिक तकनीकी का उपयोग किया। यह विधियाँ बच्चों की सहभागिता से कीं। अत: वे क्रियाशील होकर विषय से जुड़े रहे। गृह कार्य के रूप में कुछ क्रियाएँ दी गईं जो उनके लिए बोझिल नहीं थीं बल्कि वे पत्तों को इकट्ठा करने में आनंद ले रहे थे। पत्तों को इकट्ठा करके बच्चों ने अपने बड़े बुजुर्गों से बात करके ज्ञान अर्जित किया, इसके अनन्तर उस विषयवस्तु को स्वयं प्रस्तुत करके अपने मनोबल को भी बढ़ाया है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. 2005. *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. *2005. रिमझिम 1*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. *2005. रिमझिम 2*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. *2005. रिमझिम 3*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. *2005. रिमझिम 4*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

——. *2005. रिमझिम 5*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.